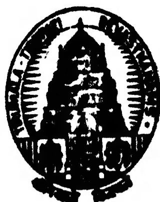
श्री वेङ्कटेश्वर सुप्रभात-स्तोत्र

हिन्दी अनुवादक

श्री वारणासि राममूर्ति 'रेणु'



Subsidised Price : 0-10 Paise only

प्रकाशक :

श्री पी. वी. आर. के. प्रसाद, आई. ए. एस.,

कार्यनिर्वहणाधिकारी,

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति.

१९७९

ॐ

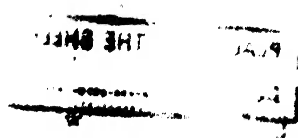
श्री वेङ्कटेश्वर सुप्रभात स्तोत्र

[हिन्दी]

*

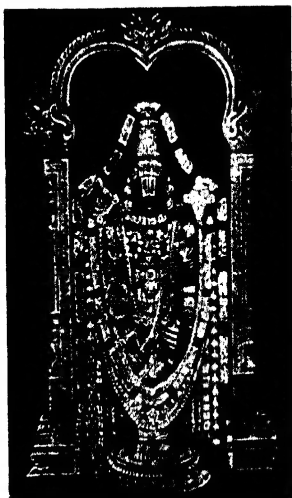
अनुवादक

श्री वारणासि राममूर्ति 'रेणु'



प्रकाशक

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति.



श्री वेङ्कटेश्वर (बालाजी)

ॐ

श्रीवेङ्कटेश सुप्रभातम्



कौसल्यासुप्रजा राम पूर्वा सन्ध्या प्रवर्तते ।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैव माह्निकम् ॥ १

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज ।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु ॥ २

मात स्समस्तजगतां मधुकैटभारेः
वक्षोविहारिणि मनोहरदिव्यरूपे ।
श्रीस्वामिनि श्रितजनप्रियदानशीले
श्रीवेङ्कटेशदयिते तव सुप्रभातम् ॥ ३

तव सुप्रभातमरविन्दलोचने
भवतु प्रसन्नमुखचन्द्रमण्डले ।
विधिशङ्करेन्द्रवनिताभिरर्चिते
वृषशैलनाथदयिते दयानिधे ॥ ४

अत्र्यादिसप्तऋषय स्समुपास्य सन्ध्यां
आकाशसिन्धुकमलानि मनोहराणि ।
आदाय पादयुगमर्चयितुं प्रपन्नाः
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥ ५

ॐ

श्रीवेंकटेश्वर सुप्रभात स्तोत्र!



कौसल्या - गर्भ - शुक्ति - मुक्ताफल पुरुषोत्तम जागो राम।
भोर हो रही है, करने दैवाह्निक - कार्य उठो घनश्याम! ॥ १ ॥

उठो उठो गोविन्द हरे! गरुडध्वज उठो सकल गुणधाम!
कमलावल्लभ उठो, बनाओ त्रिजगों को शुभ-मंगल-धाम! ॥ २ ॥

सकल जगों की मां! मधुकैटभहारि हरि की हृदयविहारिणि!
मनमोहिनी-मूर्ति-शोभित जननी! पूज्ये! अग-जग-स्वामिनि!
आश्रित-भक्तों को मंगल बरसानेवाली चिंतामणि!
मंगलमय प्रभात हो मां तव, श्रीवेंकटगिरिनाथगृहिणि! ॥ ३ ॥

सुप्रभात हो कमल - लोचने!
शुचि - प्रसन्न - मुख - विधुवरालये!
विधिशिवेंद्रवनिताभिरर्चिते!
वृषगिरीशजाये! दयालये! ॥ ४ ॥

अत्रि आदि सातों ऋषि संध्यावंदन कर, नभ गांगकमल
लिये मनोहर स्तबकों में, मकरंदमधुसहित वर परिमल,
आये हैं, पूजित समलंकृत करने प्रभु के चरणकमल!
शेषशैलस्वामिन्! जागो! होवे तव सुप्रभात भगवन्! ॥ ५ ॥

पञ्चाननाब्जभवषण्मुखवासवाद्याः
त्रैविक्रमादिचरितं विबुधाः स्तुवन्ति ।
भाषापतिः पठति वासरशुद्धिमारात्
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥ ६

ईषत्प्रफुल्लसरसीरुहनारिकेल-
पूगद्रुमादिसुमनोहरपालिकानाम् ।
आवाति मन्दमनिल स्सह दिव्यगन्धैः
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥ ७

उन्मील्य नेत्रयुगमुत्तमपञ्जरस्थाः
पात्रावशिष्टकदलीफलपायसानि ।
भुक्त्वा सलीलमथ केलिशुकाः पठन्ति
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥ ८

तन्त्रीप्रकर्षमधुरस्वनया विपञ्च्या
गायत्यनन्तचरितं तव नारदोऽपि ।
भाषासमग्रमसकृत्करचाररम्यं
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥ ९

भृङ्गावली च मकरन्दरसानुविद्ध-
झङ्कारगीतनिनदै स्सह सेवनाय ।
निर्यात्युपान्तसरसीकमलोदरेभ्यः
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥ १०

चतुरानन, पंचानन और षडानन इन्द्र आदि सुरगण,
गायन करते वामनादि अवतार - चरित भूले तन मन !
तिथि वासर तारादि पढ रहे हैं भाषापति, नतशिर बन !
शेषशैलस्वामिन् ! जागो ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ ६ ॥

कमलों का अधखुले, पूग नारिकेल मुकुलों का परिमल
वहन किये मंद मंद गति से संचारण कर रहा अनिल,
दक्षिण दिशि से निकल, सुगंधि-भार से दिव्य बने बोझिल !
शेषशैलस्वामिन् जागो ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ ७ ॥

खोल नेत्र-युगल केलीशुक, अपने श्रेष्ठ पंजरों में,
बचे - खुचे कदलीफल, खीर पेट भर खा, वर पात्रों में,
रटने लगे तुम्हारे नाम हेलया कल कल नादों में,
शेषशैलस्वामिन् जागो ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ॥ ८ ॥

नारद भी महती वीणा के तार मिलाये सुस्वर में,
तव अनन्त लीला गुण गण सुमनोहर सुंदर भाषा में,
गायन करते हैं हाथ हिला, भूल शरीर मधुर रव में,
शेषशैलस्वामिन् जागो ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ ९ ॥

फूले हुए निकट के कमलाकर में भ्रमन गा रहे हैं,
मकरंद के पान से छक, भौंरों के झुण्ड आ रहे हैं;
सेवा करने को तुम्हारी सरसिज छोड आ रहे हैं;
शेषशैलस्वामिन् जागो ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ १० ॥

योषागणेन वरदध्नि विमथ्यमाने
घोषालयेषु दधिमन्थनतीव्रघोषाः ।
रोषात्कलिं विदधते ककुभश्च कुम्भाः
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥ ११

पद्मेशमित्रशतपत्रगतालिवर्गाः
हर्तुं श्रियं कुवलयस्य निजाङ्गलक्ष्म्या ।
भेरीनिनादमिव बिभ्रति तीव्रनादं
शेषाद्रिशेखर विभो तव सुप्रभातम् ॥ १२

श्रीमन्नभीष्टवरदाखिललोकबन्धो
श्रीश्रीनिवास जगदेकदयैकसिन्धो ।
श्रीदेवतागृहभुजान्तरदिव्यमूर्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ १३

श्रीस्वामिपुष्करिणिकाऽऽप्लवनिर्मलाङ्गाः
श्रेयोऽर्थिनो हरविरिञ्चिसनन्दनाद्याः ।
द्वारे वसन्ति वरवेत्रहतोत्तमाङ्गाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ १४

श्रीशेषशैलगरुडाचलवेङ्कटाद्रि-
नारायणाद्रिवृषभाद्रिवृषाद्रिमुख्याम् ।
आख्यां त्वदीयवसतेरनिशं वदन्ति
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ १५

घोष-कुटीरों में व्रजभामिनियाँ, मटकों में दधि धर कर
मथने लगीं मधुर घुम घुम के शब्द दिशाओं में भर कर !
लगता है, दिशियाँ मटके लडते हों, स्पर्द्धा में भर कर !
शेषशैलस्वामिन् जागो ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ ११ ॥

पद्मापति के मित्र शतदलों में पैठे मधुपों के झुण्ड
अपनी देह कांति से देते इंदीवर आभा को दण्ड,
भेरीनाद समान धीर गुंजार कर रहे हैं उद्दण्ड,
शेषशैलस्वामिन् जागो ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ १२ ॥

श्रीमन् ! सकल लोक बांधव ! वांछित वरदायक भक्तों के,
श्री लक्ष्मी का आश्रय ! एकमात्र करुणा - निधि जगती के !
श्री देवी - आश्रय - वक्षःस्थल - शोभित प्रभु, वर धरती के !
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ १३ ॥

हर, चतुरानन, सनकादिक श्रीस्वामिपुष्करिणिका-जल में
कर के स्नान, सकल अंगों से बन निर्मल द्वारांचल में,
वेत्राहत-नत-मस्तक हैं भद्रार्थी बाहर हलचल में !
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ १४ ॥

श्रीगिरि, वेंकटाद्रि, नारायणगिरि, शेषाचल, गरुडाचल,
सात पुनीत नाम हैं प्रमुख वृषाचल एवं वृषभाचल,
देव तुम्हारे आवास के, सदा कहते वर नर निश्छल
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ १५ ॥

सेवापरा श्शिवसुरेशकृशानुधर्म-
रक्षोऽम्बुनाथपवमानधनाधिनाथाः ।
बद्धाञ्जलिप्रविलसन्निजशीर्षदेशाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ १६

घाटीषु ते विहगराजमृगाधिराज-
नागाधिराजगजराजहयाधिराजाः ।
स्वस्वाधिकारमहिमादिकमर्थयन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ १७

सूर्येन्दुभौमबुधवाक्पतिकाव्यसौरि-
स्वर्भानुकेतुदिविषत्परिषत्प्रधानाः ।
त्वद्दासदासचरमावधिदासदासाः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ १८

त्वत्पादधूलिभरितस्फुरितोत्तमाङ्गाः
स्वर्गापवर्गनिरपेक्षनिजान्तरङ्गाः ।
कल्पागमाकलनयाऽऽकुलतां लभन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ १९

त्वद्गोपुराग्रशिखराणि निरीक्षमाणाः
स्वर्गापवर्गपदवीं परमां श्रयन्तः ।
मर्त्या मनुष्यभुवने मतिमाश्रयन्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ २०

शिव, सुरेश, सप्तर्चि, याम्यपति, नैऋति, वरुण, पवन, धनवान्
करने को कैंकर्य तुम्हारा आठों दिक्पति श्रद्धावान् 2301
जोडे हाथ सिरों पर निज, हैं खडे तुम्हारा करते ध्यान
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ १६ ॥

देख तुम्हारा गमन धीर गंभीर विहंगराज, मृगराज,
नागाधिराज, तुरगाधिराज, हिम-सम-स्वच्छ-धवल गजराज,
निज महिमा अधिकारों की करते याचना, विनत बन आज
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ १७ ॥

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, वाक्पति, शुक्र, मंद, स्वर्भानु व केतु,
प्रमुख नवों ग्रह, इन्द्र सभा की वर शोभा का जो हैं हेतु,
तव दासानुदासगण के चरम दास हैं, भवसागर - सेतु !
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ १८ ॥

तव पद-धूलि-सुशोभित मस्तकवाले भाग्यवान किंकर,
स्वर्ग, मोक्ष की परवाह न करनेवाले भवनाशंकर,
कल्पांतर की शंका से अतिव्याकुल हैं, भक्तवशंकर !
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ १९ ॥

उत्तम स्वर्ग तथा अपवर्ग धाम के यात्री नर, पथ में,
दर्शन कर तव मंदिर-गोपुर-कलशों का, खुश हो मन में,
करते हैं संकल्प, "मनुष्य-लोक में जा फिर से जनमें !"
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ २० ॥

श्रीभूमिनायक दयादिगुणामृताब्धे
देवाधिदेव जगदेकशरण्यमूर्ते ।
श्रीमन्ननन्तगरुडादिभिरर्चिताङ्घ्रे
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ २१

श्रीपद्मनाभ पुरुषोत्तम वासुदेव
वैकुण्ठ माधव जनार्दन चक्रपाणे ।
श्रीवत्सचिह्न शरणागतपारिजात
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ २२

कन्दर्पदर्पहरसुन्दरदिव्यमूर्ते
कान्ताकुचाम्बुरुहकुड्मललोलदृष्टे ।
कल्याणनिर्मलगुणाकरदिव्यकीर्ते
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ २३

मीनाकृते कमठ कोल नृसिंह वर्णिन्
स्वामिन् परश्वथतपोधन रामचन्द्र ।
शेषांशराम यदुनन्दन कल्किरूप
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ २४

एलालवङ्गघनसारसुगन्धतीर्थं
दिव्यं वियत्सरिति हेमघटेषु पूर्णम् ।
धृत्वाऽद्य वैदिकशिखामणयः प्रहृष्टाः
तिष्ठन्ति वेङ्कटपते तव सुप्रभातम् ॥ २५

श्रीदेवी-भूदेवी-रमण ! दयादिगुणामृत का सागर,
देवों के अधिदेव ! जगत का एकमात्र आश्रय, भवहर !
श्रीमन् गरुड अनंत आदि भक्तार्चितपद्मयुग ! सुषमाकर !
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ २१ ॥

सरसिजनाभ ! हरे पुरुषोत्तम ! वासुदेव, श्रीपति ! स्वामिन् !
हे वैकुंठपति ! लक्ष्मीधव ! चक्रधर ! जनार्दन ! वर भूमन् !
श्रीवत्सांकित प्रभु ! शरणागतभक्तकल्पभूरुह ! श्रीमन्
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ २२ ॥

गर्वोद्धत कंदर्प-दर्प-हर ! सुंदर दिव्य रूपसागर !
कान्ता-कुच-सरसिज कुड्मल-केलीरत लोलनेत्र ! नागर !
दिव्ययशोमंडित ! पावन कल्याणगुणगणों का आकर !
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ २३ ॥

मत्स्य-रूप, कच्छप, वराह, वामन, नरसिंह, भक्तवत्सल !
भार्गव-तपी परशुधारी ! श्रीरामचंद्र, शरणद, निश्छल !
शेष-रूप बलराम, कृष्ण यदुनन्दन, कल्कि प्रणतजनबल !
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ २४ ॥

नभ गंगा का निर्मल जल सोने के कलशों में भर कर,
लौंग, इलाइची व घनसार सुगंधिपूर्ण सिर पर धर कर
वर वैदिक जन हर्ष-विभोर, खडे हैं सब सेवा-व्रत धर,
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ २५ ॥

भास्वानुदेति विकचानि सरोरुहाणि
संपूरयन्ति निनदैः ककुभो विहङ्गाः ।
श्रीवैष्णवा स्सततमर्थितमङ्गलास्ते
धामाश्रयन्ति तव वेङ्कट सुप्रभातम् ॥ २६

ब्रह्मादय स्सुरवरा स्समहर्षयस्ते
सन्त स्सनन्दनमुखास्त्वथ योगिवर्याः ।
धामान्तिके तव हि मङ्गलवस्तुहस्ताः
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ २७

लक्ष्मीनिवास निरवद्यगुणैकसिन्धो
संसारसागरसमुत्तरणैकसेतो ।
वेदान्तवेद्यनिजवैभव भक्तभोग्य
श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ २८

इत्थं वृषाचलपतेरिह सुप्रभातं
ये मानवाः प्रतिदिनं पठितुं प्रवृत्ताः ।
तेषां प्रभातसमये स्मृतिरङ्गभाजां
प्रज्ञां परार्थसुलभां परमां प्रसूते ॥ २९

॥ इति श्रीवेङ्कटेश सुप्रभातम् ॥

भास्कर उदित हो रहा है, सरसीरुह संप्रति विकसित हैं !
निज कल-कल नादों से नभ को करते खग गण मुखरित हैं !
श्रीवैष्णव मंगलप्रार्थी संतत तव वर धामाश्रित हैं,
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ! ॥ २६ ॥

चतुरानन इन्द्रादि अमरवर अपने साथ लिये ऋषि गण,
तथा सनंदन सनकादि संत संग लिये योगीश सुजन,
प्रांगण में तव खडे, करों में थामे मंगल-द्रव्य सुमन
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन् ॥ २७ ॥

लक्ष्मी का आश्रय प्रभु ! अमल पुनीत सद्गुणों का सागर !
भवसिंधु के पार पहुँचाने वाला सेतु ! सकल श्रम-हर !
वेदान्त से वेद्य-वैभवयुत, भक्तों के भाग्य परात्पर !
श्रीमद्वेंकटगिरिस्वामिन् ! होवे तव सुप्रभात भगवन्॥ २८ ॥

इस प्रकार वृषगिरिविभु का यह सुप्रभात-स्तव मनभावन,
प्रतिदिन प्रातःकाल भक्ति-श्रद्धा-समेत जो नर शुचिमन
पढते रहते हैं, उन भक्तों को, श्रीपति का यह सुमिरन,
परमार्थ-प्रदायिनी-प्रज्ञा प्राप्त कराता है पावन ! ॥ २९ ॥

श्रीनिवास गद्यम्

रचयिता

श्रीमान् श्रीशैल श्रीरङ्गाचार्यः

श्रीमदखिल महीमंडल मंडन धरणिधर मंडलाखंडलस्य, निखिल सुरासुर-वंदित वराहक्षेत्र विभूषणस्य, शेषाचल गरुडाचल [सिंहाचल] वृषभाचल नारायणाचलांजनाचलादि शिखरिमालाकुलस्य, नाथमुख-बोधनिधि वीधि गुण साभरण सत्त्वनिधि तत्त्वनिधि भक्तिगुणपूर्ण श्रीशैलपूर्ण गुणवशंवद परमपुरुष कृपापूर विभ्रमदुत्तुंग श्रृंगगलद्गगन गंगा समालिंगितस्य, सीमातिगगुण रामानुजमुनि नामांकित बहुभूमा-श्रय सुरधामालय वनरामायत वनसीमा परिवृत विशंकटतट निरंतर विजृंभित भक्तिरस निर्झरानंतार्याहार्य प्रस्रवण धारापूर विभ्रमद-सलिलभरभरित महातटाक मंडितस्य, कलिकर्दम मलमर्दन कलितोद्य विलसद्यमनियमादिम मुनिगण निषेव्यमाण प्रत्यक्षीभवन्निजसलिल समज्जन नमज्जन निखिल पापनाशन पापनाशन तीर्थाध्यासितस्य, मुरारि सेवक जराधिपीडित, निरार्ति जीवन निराश भूसुर वराति सुंदर सुरांगना रतिकरांग सौष्ठव कुमारताकृति कुमारतारक समापनो-दयदनून पातक महापदामय विहापनोदितसकलभुवन विदित कुमार-धाराभिधानतीर्थाधिष्ठितस्य, धरणितल गतसकल हतकलिल शुभ-सलिल गतबहुल विविधमलहतिचतुर रुचिरतर विलोकनमात्र विदलित विविध महापातक स्वामि पुष्करिणीसमेतस्य, बहुसंकट नरकावट पत-दुत्कटकलिकंकट कलुषोद्भट जनपातक विनिपातक रुचि नाटक कर-हाटक कलशाहृत कमलारत शुभमज्जन जल सज्जन [भर] भरित निज दुरित हतिनिरत जनसतत [निरस्त] निरर्गलपेपीयमान सलिल संभृत विशंकट कटाहतीर्थ [वि] भूषितस्य, एवमादिम भूरिमंजिम सर्वपातक गर्वहापक सिन्धुडंबर हारिशंबर विविधविपुल पुण्यतीर्थनिवहनिवासस्य,

श्री (मतो) वेंकटाचलस्य. शिखरशेखर महाकल्पशाखी, खर्वीभवदति-
गर्वीकृत गुरु मेर्वीशगिरिमुखोर्वीधरकुलदर्वीकरदयितोर्वीधर शिखरोर्वी
सततसदूर्वीकृति चरणनखघन गर्वचर्वण निपुणतनुकिरण मसृणित गिरि-
शिखरशेखर तरुनिकरतिमिरः, वाणीपति शर्वाणी दयितेन्द्राणीश्वर-
मुखनाणीयोरसश्रेणी निभशुभवाणी नुत महिमाणीयस्तरकोटीरभव-
दखिल भुवनभुवनोदरः वैमानिक गुरु भूमाधिक गुण रामानुकूल
धामाकरकर धामारि दरललामाच्छकनकदामायित निज रामालयनव
किसलयमयतोरणमालायित वनमालाधरः, कालांबुद मालानिभ-
नीलालक जालावृत बालाब्जसलीलामल फालांक समूलामृतधाराद्वया-
वधीरण धीरललिततरविशदतर घनसारमयोर्ध्वपुण्ड्र रेखाद्वय रुचिरः,
सुविकस्वरदलभास्वर कमलोदर गतमेदुर नवकेसर ततिभासुर परि-
पिंजर कनकांबर कलितादर ललितोदर तदालंब जंभरिपु मणिस्तंभ
गंभीरिम दंभस्तंभन समुज्जृंभमाण पीवरोरुयुगल तदालंब पृथुलकदली-
मकुल मदहरण जंघाल जंघायुगलः, नव्यदल भव्यकल पीतमल शोणिम-
लसन्मृदुल सत्किसलयाश्रुजलकारि बलशोणतलपदकमल निजाश्रय-
बल बंदीकृत शारदविधुमण्डली विभ्रमदावभ्र शुभ्रपुनर्भवाधिष्ठितांगुली
गाढ निपीडित पद्मासनः, जानुतलावधिलंबिविडंबित वारणशुंडा
दंडविजृंभित नीलमणिमयकल्पकशाखा विभ्रमदायि मृणाललतायित
समुज्ज्वलतरकनकवलय वेल्लितंकतरबाहुदंडयुगलः, युगपदुदितकोटिखर
कर हिमकर मंडल जाज्वल्यमान सुदर्शन पांचजन्य समुत्तुंगितशृंगापर
बाहुयुगलः, अभिनवशाण समुत्तेजित महा महानीलखंडमदखंडन निपुण
नवीन परितप्तकार्तस्वर कवचितमहनीय पृथुल सालग्राम परंपरा-
गुंभित नाभिमण्डल पर्यंतलंबमान प्रालंबदीप्ति समालंबित विशाल-
वक्षःस्थलः, गंगाझरतुंगाकृति भंगावलि भंगावह सौधावलिबाधावह
धारानिभहारावलि दूराहत गेहांतर मोहावह महिममसृणित महा-
तिमिरः, पिंगाकृति भृंगार निभांगार दलांगामलनिष्कासित दुष्कार्यघ-
निष्कावलि दीपप्रभनीपच्छवि तापप्रद कनकमालिका पिशंगितसर्वांगः,
नवदलितदलवलित मृदुललितकमलतति मदविहृति चतुरतर पृथुलतर
सरसतर कनकसरमय रुचिरकंठिका कमनीयकंठः, वाताशनाधिपति-
शयन कमन परिचरण रतिसमेताखिल फणधर ततिमतिकर [वर] कनक

मय नागाभरण परिवीताखिलांगावगमित शयन भूताहिराज जातातिशयः, रविकोटी परिपाटी धरकोटीरवराटी कितवाटी रसघाटी वरमणिगणकिरणविसरण सतत विधूततिमिर मोहगर्भगेहः, अपरिमितविविधभुवन भरिताखण्ड ब्रह्मांड मंडल पिचण्डिलः, आर्य धुर्यानन्तार्य पवित्रखनित्रपातपात्रीकृत निजभुजकगतव्रणकिण विभूषणवहनसूचित श्रितजनवत्सलतातिशयः, मड्डुडिंडिम डमरु झर्झर काहली पटहावली मृदुमर्दलालि मृदंग दुंदुभि ढक्किकामुखहृद्यवाद्यक मधुरमंगल नादमेदुर विसृमर सरस गानरस रुचिर सन्ततसन्तन्यमान नित्योत्सव पक्षोत्सव मासोत्सव संवत्सरोत्सवादि विविधोत्सव कृतानन्दः, श्रीमदानन्द निलयविमानवासः, सतत पद्मालया पदपद्मरेणु संचित वक्षःस्थल पटवासः, श्रीश्रीनिवासः सुप्रसन्नो विजयताम् ।

[नाटारभि भूपाल बिलहरि मायामालवगोला असावेरी सावेरी शुद्धसावेरी देवगांधारी धन्यासी बेगड हिंदुस्तानीकापी तोडि नाटकुरंजी श्रीराग सहन अठाण सारंगी वर्बाठ पंतुवराली वराली कल्याणी पूरिकल्याणी यमुनाकल्याणी हुशेनी जंझोटी कोमारी कम्भ खरहरप्रिया कलहंस नादनामक्रिया मुखारी तोडी पुन्नागवराली कांभोदि भैरवी यदुकुलकांभोदि आनंदभैरवी शंकराभरण मोहन रेगुप्ती सौराष्ट्री नीलांबरी गुर्णक्रिया मेघगर्जनी हंसध्वनी शोकावराली मध्यमावती शंजुरुटी सुरटी द्विजांवती मलयांबरी कापी परशु धनासरी देशिकतोडी आहिरी वसंतगोली केदारगोला कनकांगी रत्नांगी गानमूर्ती वनस्पती वाचस्पती दानवती रूपवती मानरूपी सेनापती हनुमतोडी धेनुका नाटकप्रिया कोकिलप्रिया गायकप्रिया वकुलाभरण चक्रवाक सूर्यकांत हाटकांबरी झंकारध्वनि नटभैरवी गीर्वाणी हरिकांभोदी धीरशंकराभरण नागानंदिनी यागप्रिया विसृमर स्वरसगान रसेत्यादि संतत संतन्यमान नित्योत्सव पक्षोत्सव मासोत्सव संवत्सरोत्सवादि विविधोत्सव कृतानंदः श्रीमदानंद निलयवासः, सतत तत पद्मालया पदपद्मरेणु संचित वक्षःस्थल पटवासः श्री श्रीनिवासः सुप्रसन्नो विजयताम् । श्री अलमेलुमंगा समेत श्री श्रीनिवासस्वामी सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भूत्वा, पनस पाटली पालाश बिल्व पुन्नाग चूत कदली चंदन चंपक

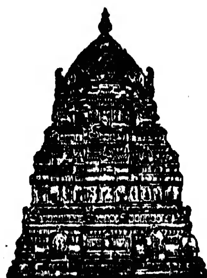
मंजुल मंदार हिंतालादि तिलक मातुलुंग नारिकेल कौंचाशोक माधूक। मलक तिन्दुक नागकेतक पूर्णकुच पूर्णमंथ रसकंद वन खंजूरखर्जूर साल कोविदार हिंताल पनस विकट वंकस वरुण तरुणघमरण बिल्वल- काश्वत्थ यक्षवसुध वर्माघ मंत्रिणी तिंत्रिणी बोध न्यग्रोध घटवटल जंबूमतल्ली वीरवल्ली वसति वासंती जीवनी पोषणी प्रमुख निखिल संदोह तमाल मालामंहित विराजमान चातक मयूर हंस भारद्वाज कोकिल चक्रवाक कपोत गरुड नारायण नानाविध पक्षिजाति समूह ब्रह्म क्षत्रिय वैश्य शूद्र नाना जात्युद्भव देवतानिर्माण माणिक्य वज्र वैडूर्य गोमेधिक पुष्यराग पद्मरागेन्द्रप्रवाल मौक्तिक स्फटिक हेमरत्न खचित धगद्ध- गायमान रथगजतुरग पदाति सेनासमूह भेरी मर्दल मुरवक झल्लरी शंख काहल नृत्य गीत ताल वाद्य कुंभवाद्य पंचमुखवाद्य अहमीमार्गझटीवाद्य किटिकुंतलवाद्य सुरटीचौंटीवाद्य तिमिलक वितालवाद्य तक्कारावबाद्य घंटाताडन ब्रह्मताल समताल कोट्टरीताल ढक्करीताल एक्कालधारावाद्य पटहकांश्यवाद्य भरतनाट्यालंकार किन्नर किंपुरुष रुद्रवीणा मुखवीणा वायुवीणा तुंबुरुवीणा गांधर्व नारदवीणा सर्वमंडल रावण हस्तवीणा स्वलंक्रियालंक्रियालंकृतानेकविध वाद्य वापीकूप तटाकादि गंगा यमुना रेवारुणा शोणनदी शोभनदी सुवर्णमुखी वेगवती वेत्रवती क्षीरनदी बाहुनदी गरुडनदी कावेरी ताम्रपर्णी प्रमुखाः महापुण्य नद्यः सकल- तीर्थैः स्सहोभय कूलंगतसदाप्रवाह ऋग्यजुस्सामाथर्वण वेद शास्त्रेतिहास पुराण सकलविद्या घोष भानुकोटि प्रकाश चंद्रकोटिसमान नित्य कल्याण परंपरोत्तराभिवृद्धिर्भूयादिति भवन्तो महान्तोऽनुगृह्णन्तु. ब्रह्मण्यो राजा धार्मिकोऽस्तु, देशोऽयं निरुपद्रवोऽस्तु. सर्वे साधुजनास्सुखिनो- विलसंतु, समस्तसन्मंगलानि सन्तु. उत्तरोत्तराभिवृद्धिरस्तु, सकल कल्याणसमृद्धिरस्तु ।]





मुद्रण

ति. ति. देवस्थान मुद्रणालय, तिरुपति.



ति. ति. दे. का मुद्रणालय, तिरुपति. प्रतियाँ - ५,००० — ३–७–७९.